1479

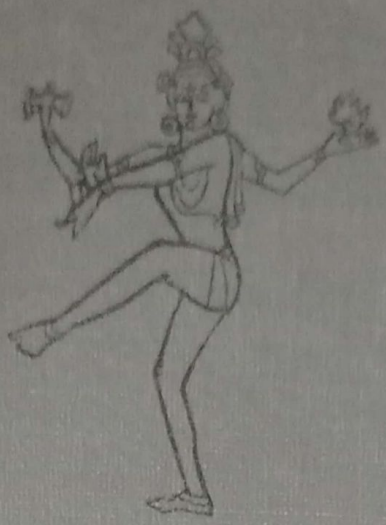

हिन्दी

नाट्यदर्पण

हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

CamScanner

891 439

विषयानुक्रम

विषय			पृष्ठ
भूमिका	[आचार्य विश्वेश्वर]	...	१-५२
सम्पादकीय—			
(क) नाट्यदर्पण में रूपकेतर काव्यशास्त्रीय प्रसंग	[डॉ० सत्यदेव चौधरी]	...	५३-८७
(ख) नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थों में नाट्यदर्पण का स्थान	[डॉ० दशरथ ओझा]	...	८८-९७

प्रथम विवेक

वृत्तिभाग का मङ्गलाचरण	...	१
वृत्तिभाग की अवतरणिका	...	२
नाट्य-रचना की दुष्करता	...	३
रस-कवियों की प्रशंसा	...	४
शब्द-कवियों की निन्दा	...	४
नीरसवाणी की निन्दा	....	५
कवियों के लिए व्यवहार-ज्ञान की उपयोगिता	...	५
विद्वत्ता के साथ कवित्व आवश्यक	...	५
काव्यापहरण की निन्दा	...	६
त्रिविध काव्य-संवाद	....	७
मूलग्रन्थ का मङ्गलाचरण	...	८
मङ्गल-श्लोक की दूसरी व्याख्या	...	११
प्रतिपाद्य विषय	...	१३
रूपकों के भेद	...	१५
(१) नाटक का लक्षण	...	१७
वर्तमान चरित्रों के अभिनय का निषेध	...	१९
नाटकों में देवताओं के नायकत्व का खण्डन	...	२०
नायिका दिव्य भी हो सकती है	....	२१
नायक के चार भेद	....	२५
स्वभाव-व्यवस्था	...	२६
चरित के दो भेद	...	२९
भावाभिव्यक्ति के नाटकीय प्रकार	...	३२
नाटकरचना-विषयक विशेष बातें	...	३६

विषय		पृष्ठ
कथाभाग की रचना की शिक्षा	...	३७
नाटक में परित्याज्य	...	३९
अङ्क-लक्षण	...	४०
नाटकों की अंक-संख्या का विषय	....	४५
अङ्कों में अवर्णनीय तत्त्व	...	४७
विष्कम्भकादि-प्रयोग	...	५०
विष्कम्भक-लक्षण	...	५१
प्रवेशक-लक्षण	...	५३
अङ्कास्य तथा चूलिका-लक्षण	...	५७
अङ्कावतार-लक्षण	...	६०
विष्कम्भकादि की विषय-व्यवस्था	...	६१
उपाय-व्याख्या	...	६२
बीज	...	६३
पताका-निरूपण	...	६५
पताका और प्रकरी	....	६८
पताका और प्रकरी का दूसरा भेद	....	६८
पताका अनिवार्य नहीं	....	६९
पताका और पताका-स्थान	....	६९
पताका-निरूपण	....	७०
पताका-स्थान	....	७१
प्रकरी-लक्षण	....	७६
बिन्दु-लक्षण	....	७७
कार्य की व्याख्या	...	८०
उपायों की मुख्यता के नियामक हेतु	....	८१
पांच दशाओं का निरूपण	...	८४
(१) आरम्भावस्था	....	८५
(२) प्रयत्नावस्था	....	८७
(३) प्राप्त्याशावस्था	....	८८
(४) नियताप्ति-अवस्था	....	८९
(५) फलागम-अवस्था	....	९१
सन्धि-निरूपण	....	९४
(१) मुख	....	९५
(२) प्रतिमुख	...	९६
(३) गर्भ	....	९७
(४) विमर्श	....	९९
(५) निर्वहण	....	१०२

विषय		पृष्ठ
(६) निर्वहण सन्धि का द्वितीय लक्षण	....	१०३
मुखसन्धि के द्वादश अङ्ग	....	१०५
(१) उपक्षेप	...	१०८
(२) परिकर	...	१०९
(३) परिन्यास	...	१०९
(४) समाधान	...	१११
(५) उद्भेद	....	११२
(६) करण	....	११४
(७) विलोमन	...	११५
(८) भेदन	....	११६
(९) प्रापण	....	११७
(१०) युक्ति	....	११९
(११) विधान	...	१२०
(१२) परिभावना	....	१२२
प्रतिमुख सन्धि के तेरह अङ्ग	....	१२३
(१) विलास	...	१२४
(२) धूनन	...	१२७
(३) रोध	...	१२८
(४) सान्त्वन	....	१३०
(५) वर्णसंहृति	....	१३१
(६) नर्म	....	१३३
(७) नर्मद्युति	...	१३५
(८) ताप	....	१३६
(९) पुष्प	....	१३८
(१०) प्रगमन	...	१४०
(११) वज्र	...	१४१
(१२) उपन्यास	....	१४३
(१३) अनुसर्पण	....	१४४
गर्भ सन्धि के तेरह अंग	....	१४५
(१) संग्रह	....	१४५
(२) रूप	...	१४७
(३) अनुमान	....	१४८
(४) प्रार्थना	...	१४९
(५) उदाहृति	...	१५०
(६) क्रम	...	१५१
(७) उद्वेग	....	१५२

CamScanner

विषय		पृष्ठ
(८) विद्रव	....	१५४
(९) आक्षेप	....	१५५
(१०) अभिसरण	....	१५५
(११) मार्ग	....	१५७
(१२) असत्याहरण	....	१५९
(१३) तोटक	....	१६०
आमर्श सन्धि के तेरह अङ्ग	....	१६१
(१) द्रव	....	१६१
(२) प्रसंग	....	१६२
(३) सम्फेट	....	१६३
(४) अपवाद	....	१६४
(५) छादन	....	१६५
(६) द्युति	....	१६७
(७) खेद	....	१६७
(८) विरोध	....	१६८
(९) संरम्भ	....	१७१
(१०) शक्ति	....	१७२
(११) प्ररोचना	....	१७५
(१२) आदान	....	१७७
(१३) व्यवसाय	....	१७७
निर्वहण सन्धि के चौदह अङ्ग	....	१७८
(१) सन्धि	....	१७९
(२) निरोध	....	१७९
(३) ग्रथन	....	१८०
(४) निर्णय	....	१८१
(५) परिभाषा	....	१८२
(६) उपास्ति	....	१८३
(७) कृति	....	१८४
(८) आनन्द	....	१८६
(९) समय	....	१८७
(१०) परिगूहन	....	१८७
(११) भाषण	....	१९०
(१२) पूर्वभाव	....	१९१
(१३) काव्यसंहार	....	१९३
(१४) प्रशस्ति	....	१९५
अन्य आचार्यों के मत का खण्डन	....	१९८

विषय		पृष्ठ
द्वितीय विवेक	....	२०२
विवेक सङ्गति	....	२०२
२. प्रकरण का लक्षण	....	२०६
प्रकरण भेद	....	२११
प्रकल्प्य स्वरूप	....	२११
उत्सर्ग का प्रतिदेश	....	२१२
३. नाटिका का लक्षण	....	२१५
नाटिका में कर्त्तव्य का उपदेश	....	२१६
नाटिका में करने योग्य अन्य बात	....	२१७
४. प्रकरणी का लक्षण	....	२१८
५. व्यायोग का निरूपण	....	२१९
सन्धि तथा अवस्थाओं की न्यूनता का उपपादन	....	२२१
६. समवकार का निरूपण	....	२२३
समवकार में किये जाने वाले अन्य कार्यों का उपदेश	....	२२५
शृङ्गारादि की व्याख्या	....	२२९
७. भाण का लक्षण	....	२३०
कर्त्तव्य के प्रदर्शन द्वारा नायक का वर्णन	....	२३०
८. प्रहसन का लक्षण	....	२३१
शुद्ध प्रहसन	....	२३२
सङ्कीर्ण	....	२३३
९. डिम का लक्षण	....	२३४
रसों की सुख-दुःखात्मकता	....	२३५
डिम में करने योग्य अन्य बातों का तथा नायक का निर्देश	....	२३६
१०. उत्सृष्टिकाङ्क का निरूपण	....	२३८
उत्सृष्टिकाङ्क में करने योग्य अन्य बातों का निर्देश	....	२३८
११. ईहामृग का लक्षण	....	२४०
ईहामृग में करने योग्य अन्य बातें	....	२४०
१२. वीथी का लक्षण	....	२४२
वीथी के तेरह अङ्ग	....	२४२
(१) व्यवहार	....	२४६
(२) अधिबल	....	२४९
(३) गण्ड	....	२५२
(४) प्रपञ्च	....	२५४
(५) त्रिगत	....	२५७
(६) छल	....	२५८
(७) असत्प्रलाप	....	

विषय		पृष्ठ
(८) वाक्केली	....	२६१
(९) मालिका	...	२६२
(१०) ग्रथन	...	२६३
(११) उद्घात्यक	....	२६६
(१२) अवलगित	....	२६७
(१३) अवस्पन्दित	....	२६८
व्यायोग आदि अन्य रूपकों के सामान्य, नाटक-लक्षण	....	२७०

तृतीय विवेक

वृत्ति-निरूपण	....	२७३
भारती वृत्ति का निरूपण	....	२७५
आमुख का लक्षण	...	२७७
आमुख के अङ्गभूत पात्रप्रवेश के नियम	...	२८१
प्ररोचना-निरूपण	...	२८३
सात्वती वृत्ति का निरूपण	....	२८५
कैशिकी वृत्ति का निरूपण	...	२८७
आरभटी वृत्ति का निरूपण	....	२८८
रस-निरूपण	...	२९०
रस का आश्रय	....	२९३
अनुमितिवाद	....	२९५
नट में अनुभावों की स्थिति	....	२९५
अनुभाव आदि संज्ञाओं का विषय	...	३०३
रसभेदों का वर्णन	....	३०५
(१) भेदों सहित शृङ्गार रस का निरूपण	...	३०६
(२) शृङ्गार के विभाव तथा अनुभावों का वर्णन	...	३०९
(३) हास्य-रस	...	३११
(४) हास्य के भेद	....	३१२
(५) करुण रस	...	३१३
(६) रौद्ररस	....	३१३
(७) वीर रस	....	३१४
(८) भयानक रस	...	३१५
(९) बीभत्स रस	...	३१६
(१०) अद्भुत रस	....	३१६
(११) शान्त रस	...	३१७
काव्य में रस का समावेश करने में विशेष सावधानी	....	३१८
विरुद्ध रसों का विरोध और उसका परिहार	...	३२०

विषय		पृष्ठ
रस-दोष	...	३२४
रसों के स्थायी भाव	...	३२९
व्यभिचारिभाव	....	३३०
(१) निर्वेद	....	३३१
(२) ग्लानि	...	३३२
(३) अपस्मार	....	३३३
(४) शङ्का	....	३३३
(५) असूया	....	३३४
(६) मद	....	३३५
(७) श्रम	....	३३५
(८) चिन्ता	....	३३५
(९) चपलता	....	३३६
(१०) आवेग	....	३३६
(११) मति	...	३३७
(१२) व्याधि	....	३३७
(१३) स्मृति	...	३३८
(१४) धृति	...	३३८
(१५) अमर्ष	...	३३८
(१६) मरण	...	३३९
(१७) मोह	....	३४०
(१८) निद्रा	...	३४०
(१९) सुप्त	...	३४१
(२०) उग्रता	....	३४१
(२१) हर्ष	...	३४१
(२२) विषाद	....	३४२
(२३) उन्माद	....	३४२
(२४) दैन्य	...	३४३
(२५) व्रीडा	...	३४३
(२६) त्रास	...	३४४
(२७) तर्क	....	३४४
(२८) गर्व	...	३४४
(२९) औत्सुक्य	...	३४५
(३०) अवहित्था	....	३४५
(३१) जाड्य	...	३४६
(३२) आलस्य	...	३४७
(३३) विबोध		

विषय | पृष्ठ

रसादिकों में पारस्परिक कार्य-कारणभाव ३४७
अनुभाव ... ३४८
(१) वेपथु ३४९
(२) स्तम्भ ३४९
(३) रोमाञ्च ३४९
(४) स्वरभेद ... ३४९
(५) अश्रु ३५०
(६) मूर्च्छा ... ३५०
(७) स्वेद ... ३५०
(८) विवर्णता ३५१
अभिनय ३५१
(१) वाचिक ... ३५१
(२) आङ्गिक ३५१
(३) सात्विक ३५४
(४) आहार्य ३५८

चतुर्थ विवेक

नान्दी ... ३६४
ध्रुवा का लक्षण ३६५
(१) प्रावेशिकी ध्रुवा ... ३६५
(२) नैष्क्रामिकी ध्रुवा ३६६
(३) आक्षेपिकी ध्रुवा ३६७
(४) प्रासादिकी ध्रुवा ३६७
(५) आन्तरी ध्रुवा ... ३६७
नाट्य के पात्रों की प्रकृति के भेद ३६९
(१) उत्तम प्रकृति-पुरुष ... ३७०
(२) मध्यम प्रकृति-पुरुष ... ३७०
(३) नीच प्रकृति-पुरुष ३७०
(४) उत्तमा-स्त्री ... ३७१
(५) मध्यमा-स्त्री ३७१
(६) नीच-स्त्री ... ३७१
नीच प्रकृति वाले नायक ३७२
मुख्य नायक का लक्षण ... ३७२
मुख्य नायक के गुण ... ३७२
(१) तेज ... ३७३
(२) विलास ... ३७३
(३) माधुर्य ३७३

विषय | पृष्ठ

(४) शोभा ३७३
(५) स्थैर्य ... ३७४
(६) गाम्भीर्य ... ३७४
(७) औदार्य ... ३७४
(८) ललित ३७५
गौण नायक ३७५
प्रतिनायक ... ३७५
विदूषक आदि की प्रकृति ... ३७६
धीरोद्धत आदि नायकों में से प्रत्येक के अलग अलग विदूषक ... ३७६
धीरोद्धत आदि के सहायक ... ३७७
अन्तःपुर के उपयोगी परिचारक-वर्ग का वर्णन ३७८
नायिका का लक्षण ... ३७८
नायिकाओं के विशेष भेद ... ३७९
नायिकाओं के तीन भेद ... ३८०
(१) मुग्धा ... ३८०
(२) मध्या ३८०
(३) प्रगल्भा ३८१
नायिकाओं के प्रसिद्ध भेद ३८१
(१) प्रोषितपतिका ... ३८१
(२) विप्रलब्धा ३८१
(३) खण्डिता ... ३८२
(४) कलहान्तरिता ... ३८२
(५) विरहोत्कण्ठिता ३८२
(६) वासकसज्जा ३८३
(७) स्वाधीनभर्तृका ... ३८३
(८) अभिसारिका ३८४
स्त्रियों के यौवन में होने वाले धर्म ... ३८४
तीन आंगिक अलंकार ... ३८४
(१) भाव ... ३८५
(२) हाव ३८६
(३) हेला ... ३८६
दस स्वाभाविक धर्म ३८७
(१) विभ्रम ... ३८७
(२) विलास ... ३८७
(३) विच्छित्ति ... ३८७
(४) लीला ... ३८८

विषय		पृष्ठ
(५) बिब्बोक	....	३८८
(६) विहृत	....	३८८
(७) ललित	...	३८९
(८) कुट्टमित	....	३८९
(९) मोट्टायित	...	३८९
(१०) किलकिंचित	....	३९०
अयत्नज अलंकार	...	३९०
(१) शोभा	...	३९०
(२) कान्ति	....	३९०
(३) दीप्ति	....	३९०
(४) माधुर्य	...	३९१
(५) औदार्य	...	३९१
(६) धैर्य	...	३९१
(७) प्रगल्भता	...	३९१
नायिकाओं का नायकों के साथ सम्बन्ध	...	३९१
नायिकाओं की सहायिकाएं	...	३९२
भाषा-विधान	....	३९२
प्राकृत-पाठ्य	...	३९३
बोलने के विषय में अन्य प्रकार	...	३९४
भाषा-विषय के अन्य प्रकार	....	३९४
रूपकों में नाम आदि का व्यवहार	....	३९५
इसी विषय में कुछ अन्य ज्ञातव्य	...	३९७
कल्पित किये जाने वाले नामों की कल्पना करने के प्रकार	....	४०२
अन्य रूपक	....	४०३
(१) सट्टक	....	४०४
(२) श्रीगदित	...	४०४
(३) दुर्मिलिता	....	४०५
(४) प्रस्थान	....	४०५
(५) गोष्ठी	...	४०६
(६) हल्लीसक	....	४०६
(७) शम्या	...	४०६
(८) प्रेक्षणक	....	४०६
(९) रासक	....	४०७
(१०) नाट्य-रासक	...	४०७
(११) काव्य	....	४०८
(१२) भाण	....	४०८
(१३) भाणिका	...	४०८